परीक्षा अभ्यास

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर इन पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए

(प्रत्येक 8 अंक)

गद्यांश 1

उन्नीसवीं शताब्दी में एक राष्ट्रीय जागरण संपूर्ण भारत में किसी-न-किसी रूप में अभिव्यक्त हो रहा था, जिसमें भारतीयता के साथ आधुनिकता का संगम था। स्वामी विवेकानंद ने अमेरिका, इंग्लैंड आदि देशों से भारत लौटकर पूर्व और पश्चिम के श्रेष्ठ तत्त्वों के सम्मिलन से भारत को आधुनिक बनाने का स्वप्न देखा था। उन्होंने माना कि भारत और पश्चिम की मूल गति एवं उद्देश्य भिन्न हैं, परंतु भारत को जगाना होगा, कुसंस्कारों एवं जाति-विद्वेष को त्यागना होगा, शिक्षित होकर देश की अशिक्षित एवं गरीब जनता को ही 'दरिद्रनारायण' मानकर उनकी सेवा करनी होगी, उनका उत्थान करना होगा। विवेकानंद का मत था कि भारत में जो जितना दरिद्र है, वह उतना ही साधु है। यहाँ गरीबी अपराध एवं पाप नहीं है तथा दरिद्रों की अपेक्षा धनिकों को अधिक प्रकाश की जरूरत है। वे चाहते थे कि हम नीच, अज्ञानी, दरिद्र सभी को भाई मानें और गर्व से कहें—हम सब भाई भारतवासी हैं। मनुष्य को मानव बनाना, आदमी को इंसान बनाना आवश्यक है। हमें ऐसी शिक्षा चाहिए, जो हमें संस्कारी मानव, हमदर्द इंसान बना सके। विचारों में विवेकानंद गांधीजी से अधिक दूर नहीं थे और ऐसे ही विचारकों का चिंतन उन्नीसवीं सदी में भारत को उद्वेलित कर रहा था।

प्रश्न

I. विवेकानंद कौन थे? उन्होंने क्या स्वप्न देखा था? (2)

II. पश्चिम के उद्देश्यों से भिन्न भारत के बारे में विवेकानंद का क्या मानना था? (2)

III. "दरिद्रनारायण मानकर उनकी सेवा करनी होगी"—पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए। (2)

IV. प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। (1)

V. निम्नलिखित वाक्य का रचना के अनुसार भेद बताइए "भारत में जो जितना दरिद्र है, वह उतना ही साधु है।" (1)

गद्यांश 2

भारत एक बड़ा देश है। बहुसांस्कृतिक, बहुजातीय, बहुभाषीय लोगों का देश। हर हिस्से के अलग रीति-रिवाज़, पोशाक की विभिन्नताएँ आदि मौजूद हैं, लेकिन देश के किसी हिस्से में भी चले जाइए, सारी विभिन्नताओं के बीच एक समानता ज़रूर है—सोने को लेकर गज़ब का प्यार। सौभाग्य का प्रतीक है—सोना। हमारी परंपराओं, मान्यताओं, रीति-रिवाज़ों, त्योहारों और संस्कारों से जुड़ा हुआ। युगों-युगों से ये हमें सम्मोहित करता रहा है। गज़ब की कशिश है इसकी चमक में, न जाने क्या जादू है इसमें। ये शुद्ध है, कालजयी, अजर और अमर है। हिंदुओं की मान्यता है कि सोना भगवान सूर्य का अंग है। उनकी अश्रुधारा से निकला हुआ, इसलिए उन्हीं के समान तेजवान और तीव्र ओज से भरपूर है। वैसे सोना न जाने कितनी पीढ़ियों से विरासत की भूमिका निभाता आ रहा है। माँ से बेटी और फिर इस तरह आगे की पीढ़ियों तक। यह महज़ एक धातु नहीं, बल्कि जीवन का एक हिस्सा है। सुख-दुःख का साथी। हमेशा संबल और आत्मविश्वास देने वाला। ये राजाओं का भी प्यारा रहा और रंकों का भी तथा आध्यात्मिकता से भरपूर महात्माओं का भी।

प्रश्न

I. भारत में विभिन्नताएँ होते हुए भी समानता किस प्रकार है? (2)

II. 'सोने' को किसका प्रतीक बताया गया है व क्यों? (2)

III. "यह महज़ एक धातु नहीं, बल्कि जीवन का एक हिस्सा है" पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए। (2)

IV. प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। (1)

V. 'बहुजातीय' में किस उपसर्ग का प्रयोग किया गया है? (1)